शिक्षा तंत्र में संवाद और समन्वय

अनंत गंगोला और जगमोहन सिंह कठैत

शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण, रोचक किन्तु जटिल प्रक्रिया है। जटिल इसलिए कि शिक्षा अपने सामाजिक ताने–बाने के साथ संचालित होती है। ये ताने–बाने भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक आदि विविधताओं से निर्धारित होते हैं। ये विभिन्न प्रकार की विविधताएँ शिक्षा प्रक्रिया में जटिलताएँ पैदा कर देती हैं। दूसरी ओर शिक्षा की विषय–वस्तु, शिक्षण की विधा बहुत विविध और व्यापक होती है और सतत बदलती रहती है। तीसरी ओर इसके हितधारक (विद्यार्थी व इसके सुगमकर्ता–शिक्षकगण) भी विविध, परिवर्तनशील व बहुआयामी हैं। ये दोनों आयाम भी शिक्षा की प्रक्रिया को जटिल बनाते हैं। कुल मिलाकर शिक्षा अपनी गतिशीलता, विविधता और बहुआयामी विशेषताओं के कारण जटिल प्रक्रिया बन जाती है।

अब भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से विविध व व्यापक देश में सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में इसकी जटिलता की कल्पना करते हैं तो इसका विस्तार और भी बढ़ जाता है। एक अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि हमारे यहाँ जितने बच्चे मध्याह्न भोजन करते हैं उतनी कई देशों की पूरी जनसंख्या ही है। भोजन की विभिन्न आदतों के चलते किसी एक प्रदेश में भी मध्याह्न भोजन के लिए एक मैन्यू तैयार करना एक चुनौतीपूर्ण काम है।

शिक्षा के परिवर्तनशील स्वभाव के चलते इसमें विभिन्न प्रकार की संस्थाओं की स्थापना होती रहती है जिसमें विभिन्न प्रकार के हित धारक जुड़ते रहते हैं और उनसे विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं की अपेक्षा की जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा का सर्व शिक्षाकरण व सार्वभौमीकरण होना, एक बड़ा व महत्त्वपूर्ण परिवर्तन रहा है। यह परिवर्तन पुराने मुद्दों का विस्तार भर नहीं बल्कि मुद्दे भी नए हैं और सन्दर्भ भी नए हैं तथा साथ ही मूल्य और सामाजिक बोध भी नए हैं। इन नवीन सन्दर्भों में सर्व शिक्षा के तहत विभिन्न संस्थाओं/संरचनाओं की स्थापना हुई है। शिक्षा के विकेन्द्रीकरण के लिए समुदाय की भागीदारी और सिविल सोसाइटी की भागीदारी अपेक्षित की गई।

उत्तराखण्ड में विद्यालय को सहयोग करने वाली संस्थाओं का वर्तमान स्वरूप

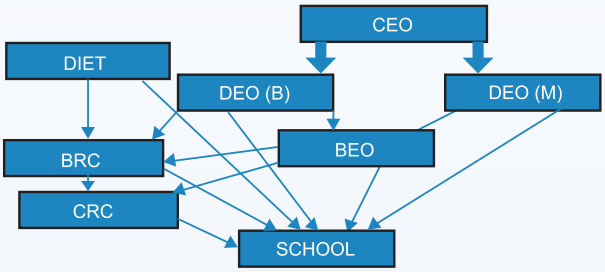

एक मुहिम के रूप में संरचनाएँ तो स्थापित हो गईं और समुदाय तथा सिविल सोसाइटी भी विभिन्न स्तरों पर भागीदारी करने लगी लेकिन इन सभी संस्थाओं में अपनी भूमिकाओं की स्पष्टता का अभाव रहा। परन्तु सबसे बड़ा अभाव आपसी संवाद व आपसी समन्वयन का रहा है। संस्थाओं के मध्य या तो संवादहीनता थी/है या फिर अपने में ही संवाद कर रही थीं। दाहिना हाथ क्या कर रहा है, बाएँ हाथ को मालूम हो पाए इसकी व्यवस्था नहीं है। यदि इस प्रचलित मानस की दृष्टि से संस्थाओं का रेखिक स्वरूप देखते हैं तो कुछ इस प्रकार दिखता है जिसमें नई संरचनाएँ अनुसमर्थन संस्थान की जगह अनुश्रवण संस्थानों में तब्दील होती चली गईं।

यह समझना भी निहायत जरूरी है कि शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर काम स्वैच्छिक अप्रोच, पहल व स्वप्रेरित होकर किए जाने वाले प्रयास से ही सफल तथा स्थायी होते हैं, आदेशों से शिक्षा व शिक्षण की प्रक्रियाएँ अमल में तो आती हैं लेकिन अपेक्षित स्थायित्व व जीवंतता नहीं प्राप्त कर पाती हैं।

जिन संस्थानों के मध्य बेहतर संवाद, बेहतर समन्वयन और सहयोग होना चाहिए था वह नहीं दिखाई पड़ रहा है। जो लोग संवदेनशील निकले और नई परिस्थितियों के मर्म को समझ पाए उन्होंने अपने स्तर से प्रयास किए और अपनी दिशा बच्चों की ओर मोड़ पाए। इस प्रकार के लोग जो कुछ बेहतर कर पाए वे बेहतर, संस्थान के कारण नहीं बल्कि बेहतर व्यक्ति के कारण अच्छा कुछ कर पाए। ये संस्थान जो एक–दूसरे के पूरक थे और

पूरकता में ही जिनकी सफलता थी वे पूरक होने की जगह समानान्तर हो गए और कुछ–कुछ गतिविधियाँ विरोधाभासी होती गईं।

उपरोक्त पृष्ठभूमि के चलते हम लोगों ने महसूस किया कि कोई एक संस्था हो जो संरचना के रूप में तो औपचारिक हो परन्तु प्रक्रिया के रूप में अनौपचारिक। जहाँ शैक्षिक मुद्दों पर संवाद हो तथा आपसी समन्वयन हो और इस संवाद व समन्वयन में एक–दूसरे के प्रति सम्मान हो ताकि ये नई संरचनाएँ शिक्षा में प्रभावी योगदान कर सकें न कि एक बोझ के रूप में स्थापित हों। इस बात की आवश्यकता शासन ने भी महसूस की और हमें न केवल उत्तरकाशी व उधमसिंह नगर में ऐसे अकादमिक सन्दर्भ समूह गठित करने की अनुमति प्रदान की गई बल्कि इसके लिए शासन द्वारा वित्तीय प्रावधान भी किए गए। इस प्रकार एक अकादमिक सन्दर्भ समूह (Academic Resource Group- ARG) की अवधारणा तैयार हुई जिसने अपने स्वरूप का विस्तार कुछ इस प्रकार पाया–

- यह एक ऐसा सर्वनिष्ठ मंच है जिसमें शिक्षकों से लेकर अधिकारियों तक सभी संस्थानों के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं।
- एक ऐसा मंच जहाँ पर प्रत्येक वर्ग/संस्थान की एक–दूसरे से अपेक्षाएँ तथा एक–दूसरे की समस्याओं व चुनौतियों को समझने का अवसर मिलता है।
- अकादमिक अनुसमर्थन संस्थानों के मध्य बेहतर समन्वयन हेतु एक साझा मंच प्राप्त होता है।
- शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु हो रहे 'विशेष' प्रयासों को 'शेष' लोगों तक पहुँचाने हेतु एक मंच प्रदान करता है।
- अकादमिक अनुसमर्थकों एवं शिक्षकों की **समस्याओं व चुनौतियों की पहचान** करता है तथा **समाधान हेतु उपायों** की अनुशंसा करता है।
- **व्यक्तिगत निर्णयों** के बजाय **सामूहिक निर्णयों** की ओर बढ़ने की संस्कृति बनाता है।
- ए.आर.जी. गठन का मकसद **संवादहीनता को तोड़ना ही नहीं** बल्कि **संवाद बढ़ाना** है जिस ओर हमें बढ़ना है।
- इसके पूरे क्रियान्वयन में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को अपनाया जाता है। जैसे– बैठकों में एक सदस्य के रूप में सभी के लिए बैठने, रहने एवं खाने की समान व्यवस्थाएँ की जाती हैं। सभी लोग अपनी बात एक सदस्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कोई भी व्यक्ति सुगमकर्ता हो सकता है परन्तु कोई अधिकारी नहीं होता है ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा मिल सके।
- DPO/DEO, DIET एवं अन्य अकादमिक संस्थानों को उनकी वार्षिक अकादमिक योजना बनाने में सहयोग करना तथा समय–समय पर समीक्षा करना।

यदि संवाद व समन्वयन की इस पहल को पूरी तरह आत्मसात किया जाता है तो संस्थाओं के मध्य समन्वयन का स्वरूप कुछ इस प्रकार उभरता है जिस ओर हम लोग कुछ आगे भी बढ़े हैं–

विद्यालय को सहयोग करने वाली संस्थाओं का कैसा हो स्वरूप

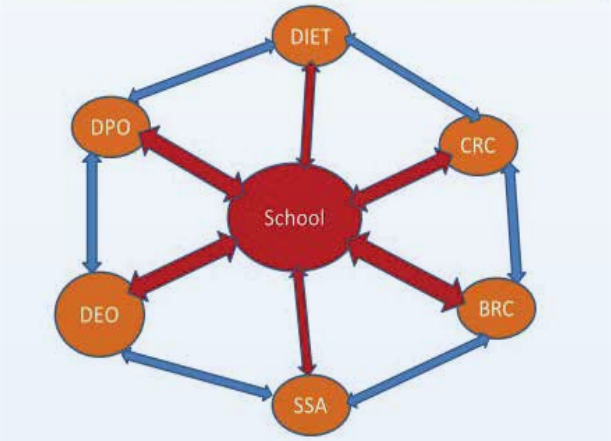

अब तक की यात्रा के कुछ पड़ाव–

जनपद उत्तरकाशी में ए. आर. जी. गठन के बाद से कुछ ऐसे ऐतिहासिक फैसले हुए हैं और पहल की गई जिसने राज्य को भी दिशा प्रदान की है। जैसे –

1. बैठक की अकादमिक चर्चाओं से शैक्षिक नवाचार के रूप में बाल शोध मेले की आवधारणा उदय हुई है और जिसने बाद में पूरे राज्य में विस्तार पाया।
2. शिक्षकों की समस्याओं को सुनियोजित तरीके से समाधानित करने के लिए शिक्षकों के समस्या निवारण शिविरों का विकास खण्ड स्तर पर आयोजन किया गया जिसने शिक्षकों के बीच काफी लोकप्रियता पाई। इतना ही नहीं अनुश्रवण व अनुसमर्थन के दौरान अनुश्रवणकर्ताओं ने इस बात का नैतिक अधिकार भी पाया कि वे शिक्षकों को बेहतर प्रदर्शन के लिए मजबूती से आग्रह कर पाएँ।

3. बैठकों में समस्याओं/मुद्दों को शोध आधारित तार्किक तरीके से प्रस्तुत करने की संस्कृति की ओर बढ़े।

4. कई जगहों पर विकास खण्ड स्तरीय एवं संकुल स्तरीय बैठकों ने अकादमिक स्वरूप पाया है जो आज भी जारी ही नहीं बल्कि परिपक्व होता जा रहा है।

5. जिन शिक्षकों व अनुसमर्थनकर्ताओं ने कुछ विशेष सार्थक व सफल प्रयास किए उन्हें साझा करने का मंच प्राप्त हुआ। इस पहल ने दो काम किए– एक ओर तो उन पहलकर्ताओं को एक सम्मान व पहचान दिलाई वहीं दूसरी ओर अन्य लोगों को भी नवाचारी पहल के लिए एक विचार व प्रेरणा मिली।

6. ऐसा नहीं है कि केवल बैठकों के आयोजन मात्र से यह सब होने लगा है बल्कि अकादमिक सन्दर्भ समूह की क्षमता संवर्द्धन एवं परिप्रेक्ष्य निर्माण के लिए निम्न कार्यशालाएँ आयोजन व शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन किया गया–

   - दस दिवसीय क्षमता संवर्द्धन एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य निर्माण कार्यशाला – दिगन्तर, जयपुर राजस्थान में आयोजित की गई।
   - दस दिवसीय क्षमता संवर्द्धन एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य निर्माण कार्यशाला – विद्या भवन, उदयपुर, राजस्थान में आयोजन हुआ।
   - दस दिवसीय क्षमता संवर्द्धन एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य निर्माण कार्यशाला – एकलव्य, होशंगाबाद, म. प्र. में आयोजन किया गया।
   - पाँच दिवसीय क्षमता संवर्द्धन एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य निर्माण कार्यशाला आयोजन – अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन एवं डी.पी. ओ.–एस. एस. ए. द्वारा उत्तरकाशी में ही किया गया।

कुछ अवलोकन

इस पूरी यात्रा में हमने पाया कि यह एक महत्त्वपूर्ण पहल है जिसने विभिन्न संस्थानों के बीच समन्वयन की एक अच्छी कोशिश की। संस्थानों व लोगों के मध्य एक अच्छे व्यवहार की संस्कृति के बीज बोए। हमने इस यात्रा में पाया कि जब भी सम्मानपूर्वक व समानता भाव से संवाद होता है तो यह संवाद बहुत रचनात्मक होता है। ऐसे में लिए गए निर्णय भी प्रभावी एवं दीर्घगामी होते हैं। सम्मान एवं समानतापूर्वक संवाद के लिए वातावरण सृजित करने का दायित्व सम्बन्धित नेतृत्व की ओर अधिक जाता है। नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस पहल की सफलता नेतृत्व व संचालकों के परिप्रेक्ष्य पर काफी हद तक निर्भर करती है।

अकादमिक सन्दर्भ समूह के इस प्रयोग को उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी एवं उधमसिंह नगर जिलों में करते हुए 5–6 साल ही हुए हैं, उसमें भी अधिकारियों के सतत तबादलों के कारण बैठकों व कार्यशालाओं की निरन्तरता नहीं रह पाई। इस छोटी–सी यात्रा पर नजर डालते हुए हम कुछ उपलब्धियों के बारे में दावा तो नहीं कर पाएँगे परन्तु कुछ बातें हमारे सामने और स्पष्ट हुई हैं।

शिक्षा के इतने व्यापक तंत्र और संरचना में तमाम काम करने वाले लोग और विशेषकर शिक्षक **'भीड़ में भी अकेले'** हैं। शिक्षा के कर्म में जुटे लोगों के मध्य सामूहिक, समन्वित प्रयासों और एक लगातार चलते रहने वाले 'संवाद' की बेहद जरूरत है। यह संवाद और समन्वयन शिक्षाकर्म में लगे लोगों के पेशेवर एकाकीपन को तोड़ेगा और व्यक्ति और संस्थाएँ एक–दूसरे के पूरक और सहयोगी बन पाएँगे। अकादमिक सन्दर्भ समूह का उत्तराखण्ड में किया गया प्रयोग स्वस्थ आरम्भिक संकेत प्रदान करता है हालाँकि यात्रा अभी लम्बी है और यह प्रथम पड़ाव ही है।

अनंत गंगोला वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु में कार्यरत हैं। इसके पहले वे देश के पाँच राज्यों के शासकीय स्कूलों एवं उनके शिक्षकों के साथ काम कर रहे थे। इन राज्यों में मध्यप्रदेश तथा उत्तराखण्ड शामिल हैं। उनसे anant@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

जगमोहन सिंह कठैत पिछले सात वर्ष से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में कार्यरत हैं। वर्तमान में वे उत्तराखण्ड में श्रीनगर पौढ़ी में गढ़वाल टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। इसके पहले वे अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के उत्तरकाशी जिला संस्थान का नेतृत्व कर रहे थे। उन्हें सामाजिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का पच्चीस से अधिक वर्षों का अनुभव है। उनसे jagmohan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।